Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **02.11.18** मस्जिद बैतुर्रहमान, मैरी लैन्ड, अमरीका।

स्पष्ट हो कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में दुनिया से शिर्क को मिटाने के लिए आए थे।
अतः यह सम्भव नहीं कि आपकी सच्ची ख़िलाफ़त किसी भी प्रकार के शिर्क को बढ़ाने वाली हो अथवा हवा देने वाली हो
ख़िलाफ़त का मूल काम ही शिर्क की समाप्ति तथा तौहीद की स्थापना है

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- प्रत्येक व्यक्ति पुरुष हो अथवा स्त्री जो अपने आपको अहमदी कहता है उसका केवल इतना ऐलान ही उसे वास्तविक अहमदी नहीं बना देता कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानता है, आपके दावे को मानता है बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक वास्तविक अहमदी बनने के लिए कुछ शर्तें रखी हैं, कुछ दायित्व डाले हैं, कुछ कर्त्तव्यों की ओर ध्यान दिलाया है कि यदि इनके अनुसार कर्म करोगे, इनको अदा करोगे तो तभी सच्चे रंग में मेरी जमाअत में गिने जाओगे। सच्चा अहमदी बनने के लिए अपनी समस्त क्षमताओं एवं प्रतिभाओं के साथ उन बातों पर अमल करना आवश्यक है जिनकी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अहमदी से आशा की है। आपने फ़रमाया कि बैअत का अभिप्रायः ख़ुदा तआला के हवाले अपनी जान कर देना है। अतः यह कोई छोटा काम नहीं है जब हम अपनी कोई चीज़ किसी को बेचते हैं तो फिर उस पर हमारा कोई अधिकार नहीं रहता। अतः यह वह अवस्था है जो हमें अपने ऊपर लागू करनी चाहिए और यह वह सोच है जो हमें अपनी जानों के विषय में रखनी चाहिए। आप अलै. ने फ़रमाया कि बैअत करने वाले को पहले विनयता एवं विनम्रता धारण करनी पड़ती है तथा अपने अहंकार एवं घमंड से अलग होना पड़ता है। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्द हैं कि ख़ुदी और नफ़सानियत से अलग होना पड़ता है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- कुछ लोगों में ख़ुदी और नफ़सानियत की ऐसी स्थिति है कि एक पदाधिकारी दूसरे पदाधिकारी से रूष्ठ होकर एक स्थान पर मेरी उपस्थिति के बावजूद मस्जिद में नमाज़ों के लिए हाज़िर नहीं हुआ। इस लिए कि ओहदेदार से उसके सम्बंध ठीक नहीं थे। ख़ुदी और नफ़सानियत इतनी बढ़ गई कि ख़िलाफ़त की बैअत का दावा तो है किन्तु इसकी चिंता कोई नहीं है।

ख़लीफ़-ए-वक़्त वहाँ मौजूद है तथा उसके पीछे नमाज़ें पढ़ने जाना है, न कि किसी पदाधिकारी के लिए मस्जिद आना है तथा स्वयं भी ओहदेदार है तो यह स्थिति यदि हो तो फिर ऐसे अहमदी होने का कोई लाभ नहीं। अतः अहंकार को मारना पड़ता है, ख़ुदी और नफ़सानियत से अलग होना पड़ता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यदि बैअत के समय वादा और है तथा फिर अमल और है तो देखो यह कितना बड़ा अन्तर है, कितना बड़ा विरोधाभास है तुम्हारी बातों में, यदि तुम ख़ुदा तआला से अन्तर रखोगे तो वह तुम से अन्तर रखेगा। आपने फ़रमाया- इस लिए तुम अपने ईमानों तथा कर्मों की समीक्षा करो कि क्या ऐसी तबदीली और सफ़ाई कर ली है कि तुम्हारा दिल ख़ुदा तआला का सिंहासन हो जाए और तुम उसकी सुरक्षा की छाँव में आ जाओ। आपने फ़रमाया कि मैं तुम्हें बार बार नसीहत करता हूँ कि तुम ऐसे पवित्र एंव शुद्ध हो जाओ जैसे सहाबा ने अपना बदलाव किया। उन्होंने वर्षों अपितु नस्लों की दुश्मनी को केवल ख़ुदा तआला के लिए मुहब्बत प्यार तथा भाईचारे में बदल दिया। उन्होंने जब शिर्क से तौबा की तो पूर्णत्या गुप्त शिर्क से भी बचने का प्रयास किया। गुप्त शिर्क क्या है इसको स्पष्ट करते हुए हज़रत मसीह मौऊद

अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- शिर्क से केवल इतना ही अभिप्रायः नहीं कि पत्थरों इत्यादि को पूजा जाए बल्कि यह भी शिर्क है कि साधनों को पूजा जाए।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कर्मों में दिखावे से काम लेना तथा गुप्त अभिलाषाओं में लिप्त होना यह भी शिर्क है। यदि कोई व्यक्ति दीन के आदेश को पीछे छोड़ कर सांसारिक अभिलाषाओं को पूरा करता है तो शिर्क करता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि तौहीद केवल इस बात का नाम नहीं कि मुंह से केवल ला इलाहा इल्लल्लाह कह दें और दिल में हज़ारों बुत जमा हों बल्कि जो व्यक्ति किसी अपने काम तथा छल कपट एवं योजना को ख़ुदा के जैसा सम्मान देता है अथवा किसी इंसान पर भरोसा करता है जो ख़ुदा तआला पर रखना चाहिए अथवा अपने नफ़्स को वह स्थान देता है जो ख़ुदा को देना चाहिए इन सारी अवस्थाओं में वह ख़ुदा तआला की दृष्टि में शिर्क करने वाला है। किसी ने मुझे कहा कि लोग ख़लीफ़-ए-वक़्त को इस हद तक उच्च स्तर दे देते हैं कि जैसे वे शिर्क की सीमा तक चले गए हैं स्पष्ट हो कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में दुनिया से शिर्क को मिटाने के लिए आए थे। अतः यह सम्भव नहीं कि आपकी सच्ची ख़िलाफ़त किसी भी प्रकार के शिर्क को बढ़ाने वाली हो अथवा हवा देने वाली हो ख़िलाफ़त का मूल काम ही शिर्क की समाप्ति तथा तौहीद की स्थापना है तथा उस मिशन को पूरा करना है जिसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए। हाँ, ख़िलाफ़त का आदर स्थापित करना ख़लीफ़-ए-वक़्त का काम है तथा यह उसकी ज़िम्मेदारी है और वह करेगा तथा इस लिए करेगा कि अल्लाह तआला के वादों के अनुसार और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्य वाणियों के अनुसार ख़िलाफ़त के द्वारा तौहीद का पैग़ाम दुनिया में फैलना है और दुनिया से शिर्क की समाप्ति होना है। अतः कुछ कच्चे दिमाग़ों में जो ऐसे विचार प्रशिक्षण की कमी के कारण उभरते हैं वे इन्हें अपने मस्तिष्क से निकाल दें।

तौहीद के क़याम का प्रयास और शिर्क से अपने मानने वालों के दिलों को शुद्ध करने के महत्त्व पूर्ण काम के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें जो ध्यान दिलाया तथा जिस पर हमारी बैअत ली, वह झूठ और नैतिक बुराईयों से बचना है। अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है कि- فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ अर्थात- बुतों की गन्दगी से बचो तथा झूठ कहने से बचो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि क़ुर्आन करीम ने एक झूठ को भी एक अपवित्रता एवं गन्दगी कहा है, देखो यहाँ झूठ को बुत के समान बताया है तथा वास्तव में झूठ भी एक बुत ही है अन्यथा क्यूँ सच्चाई को छोड़कर दूसरी ओर जाता है।

झूठ भी एक बुत है जिस पर भरोसा करने वाला ख़ुदा पर भरोसा छोड़ता देता है, अतः झूठ बोलने से ख़ुदा भी हाथ से जाता है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः यदि तौहीद का दावा है, यदि ख़ुदा तआला की इबादत का दावा है, यदि सच्चा मुसलमान बनने का दावा है तो फिर झूठ को अपने अन्दर से हमें निकालना होगा तथा झूठे को भी निकालना होगा। कुछ लोग छोटी छोटी बातों में झूठ से काम लेते हैं यह एक मोमिन की शान नहीं है यह नहीं समझना चाहिए कि कुछ छोटी मोटी बातें झूठ नहीं हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने किसी छोटे बच्चे को कहा कि आओ मैं तुम्हें कुछ देता हूँ और फिर वह उसे देता कुछ नहीं, तो यह झूठ माना जाएगा। अतः मज़ाक़ में भी जो झूठ है वह भी झूठ है। फ़िर आपने फ़रमाया कि झूठ गुनाह और घोर पाप की ओर ले जाता है तथा घोर पाप नर्क की ओर।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विशेष रूप से एक बुराई से बचने का उपदेश दिया है बल्कि बैअत की शर्तों में भी है, वह व्यभिचार है। आप अलै. ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला जो फ़रमाता है कि- وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَا अर्थात- व्यभिचार के निकट मत जाओ अर्थात इस प्रकार के प्रचलन से दूर रहो जिनके कारण यह विचार भी दिल में पैदा हो सकता हो। फ़रमाया- उन मार्गों पर मत चलो जिनसे इस पाप के होने की सम्भावना हो। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आजकल के युग में टी वी है, इन्टरनैट है उस पर इस प्रकार की गन्दी फ़िल्में दिखाई जाती हैं जिनमें खुले आम व्यभिचार की प्रेरणा दी जाती है। अतः ऐसी चीज़ों से बचना प्रत्येक अहमदी का काम है। कई घरों में इस कारण से लड़ाई झगड़े हैं, कई घर इस कारण से टूट रहे हैं अथवा टूट चुके हैं कि पति बैठा फ़िल्में देख रहा है अथवा इन्टरनैट पर बैठा हुआ है तथा अनुचित विचार पैदा हो रहे हैं। कई युवा इस कारण से बर्बाद हो रहे हैं तथा अनुचित संगति में पड़ रहे हैं क्यूँकि नंगी और गन्दी फ़िल्मों को देखने की आदत है। अतः एक अहमदी को

विशेष रूप से इन चीज़ों से बचना चाहिए।

फिर एक अहमदी बनने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हर प्रकार के अत्याचार से बचने की ओर विशेष रूप से ध्यान दिलाया है। आपने फ़रमाया कि यदि मुझसे सम्बद्ध होना है तो फिर किसी शरारत और अत्याचार और फ़साद और फ़ितने का विचार भी दिल में न लाओ। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया गया कि सबसे बड़ा अत्याचार कौनसा है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सबसे बड़ा अत्याचार यह है कि कोई व्यक्ति अपने भाई के अधिकार की एक हाथ ज़मीन दबा ले अर्थात क़बज़ा कर ले उस पर। अतः किसी के अधिकारों का हनन बहुत बड़ा जुल्म और पाप है। ग़ैरों को हम इस्लाम की विशेषताएँ बताते हैं तो कहते हैं कि बन्दों के हक़ों की अदायगी के उच्चतम स्तर इस्लाम की शिक्षा में हैं। इस्लाम हक़ लेने के बजाए हक़ों की अदायगी की ओर ध्यान दिलाता है। लोगों को तो हम बढ़ बढ़ कर ये बातें कहते हैं और हमारे कर्म यदि इससे भिन्न हैं तो हम पापी हैं और झूठ बोल रहे हैं। अतः इसकी भी सूक्ष्मता पूर्वक हर अहमदी को समीक्षा करनी चाहिए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला की इबादत करना एक मोमिन होने की महत्त्व पूर्ण शर्त है बल्कि अल्लाह तआला ने इंसान की पैदायश का उद्देश्य भी इबादत ही कहा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ऐ वे तमाम लोगो जो अपने आपको मेरी जमाअत कहते हो आसमान पर तुम उस समय मेरी जमाअत कहे जाओगे जब सच मुच तक़्वा की राहों पर क़दम मारोगे, सो अपनी पंज वक़्ता नमाज़ों को ऐसे भय और उपस्थिति के साथ अदा करो कि जैसे तुम ख़ुदा तआला को देखते हो। फ़रमाया- नमाज़ प्रत्येक मुसलमान पर फ़र्ज़ है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक क़ौम ईमान लाई तथा निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह, हमें नमाज़ माफ़ कर दी जाए क्यूँकि हम कारोबारी आदमी हैं पशुओं के कारण कपड़ों का भरोसा नहीं होता और न हमें समय मिलता है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके जवाब में फ़रमाया कि देखो, जब नमाज़ ही नहीं है तो है क्या, वह दीन ही नहीं जिसमें नमाज़ नहीं। नमाज़ क्या है, यही कि अपनी विनतियों और अपनी दुर्बलताओं को ख़ुदा के समक्ष पेश करना तथा उसी से सहायता मांगना, कभी उसकी महानता और उसके आदेशों का पालन करने के लिए हाथ बाँध कर खड़े होना और कभी पूर्णतः करुणा और श्रद्धा से उसके आगे सजदे में गिर जाना, उससे अपनी आवश्यकताओं को मांगना, यही नमाज़ है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट रूप से फ़रमाया है कि पशुओं तथा इंसानों में अन्तर करने वाली चीज़ ख़ुदा तआला की इबादत और नमाज़ है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- मैं कई बार इसकी ओर ध्यान दिला चुका हूँ कि यदि नमाज़ सैन्टर अथवा मस्जिद दूर है तो कुछ आस पास के घर आपस में मिल कर एक स्थान निश्चित कर लें जहाँ नमाज़ अदा की जा सकती हो। इससे जहाँ जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का सवाब मिलेगा वहाँ नमाज़ों की ओर ध्यान भी रहेगा और अगली नस्लों का सुधार होता रहेगा। नमाज़ के महत्त्व के विषय में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक कथन ऐसा है जो निःसन्देह हमारे दिलों को हिला देने वाला है। आप सल. फ़रमाते हैं कि क़यामत के दिन सबसे पहले जिस चीज़ का बन्दों से हिसाब लिया जाएगा वह नमाज़ है, यदि यह हिसाब ठीक रहा तो वह सफल हो गया और मुक्ति पा ली, यदि यह हिसाब ख़राब हुआ तो वह असफल हो गया और घाटे में रहा। अल्लाह तआला प्रत्येक अहमदी को यह हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि तहज्जुद और नफ़्ल पढ़ने की ओर भी ध्यान देना चाहिए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है कि तुम्हारे फ़र्ज़ों में जो कमी रह जाती है अल्लाह तआला उन्हें नफ़्लों के द्वारा पूरी फ़रमा देता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- फिर एक अत्यंत आवश्यक बात जिस पर प्रत्येक अहमदी को नज़र रखनी चाहिए वह अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की माफ़ी मांगने की ओर निरन्तर ध्यान है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ऐसा नहीं कि लोगों को अज़ाब दे जबकि वे इस्तिग़फ़ार कर रहे हों। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इस ज़माने में जो आजकल का ज़माना है क़ुर्आन करीम की यह दुआ पढ़ते रहना चाहिए कि- رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ अर्थात- ऐ अल्लाह, हमने अपनी जानों पर जुल्म किया यदि तू हमें न बख़्शेगा तथा हम पर दया नहीं करेगा तो हम हानि प्राप्त करने वालों में से हो जाएँगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने मानने वालों के लिए भी यह मूल शर्त रखी है कि वे प्राणियों के अधिकार देने वाले हों और अल्लाह तआला के प्राणियों को किसी भी प्रकार की

कठिनाई देने से बचें। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि यदि सारे मुसलमान आज इस वास्तविकता को समझ लें तथा इसके अनुसार कर्म करने वाले हों और मुस्लिम सरकारें इसके अनुसार अमल करने वाली हों तो आजकल मुसलमान मुसलमान पर जो अत्याचार करके उनके जान व माल नष्ट कर रहा है, हज़ारों लाखों बच्चे अनाथ हो रहे हैं, लाखों महिलाएँ विधवा हो रही हैं, बूढ़े मर रहे हैं, यह कुछ भी न हो।

फिर घमन्ड एक बड़ी बुराई है जिससे बचने की अल्लाह तआला ने हमें क़ुर्आन करीम में प्रेरणा दी है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसके बारे में बड़ा ध्यान दिलाया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी घमन्ड होगा वह जन्नत में नहीं जा सकेगा। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- हर अहमदी को इससे बचने का प्रयास करना चाहिए। दो विभिन्न अवसरों पर मेरे साथ मजलिसों में लड़कियों से यह बताया गया कि जमाअत में भी कुछ इस प्रकार का नस्ली भेदभाव है। यदि किसी भी कारण से युवा पीढ़ी में यह दुर्भावना उत्पन्न हो रही है तो यह बड़ी बुरी बात है। हुज़ूर-ए-अनवर ने ज़ैली संगठनों को इस संदर्भ में तर्बियत की ओर ध्यान दिलाया है। हुज़ूर-ए-अनवर ने माल की क़ुर्बानी की ओर ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया- अल्लाह तआला की कृपा से दुनिया भर की जमाअतें माल के बलिदान में बढ़ रही हैं किन्तु जो नियमानुसार माली निज़ाम है चन्दे का, उसको देखने से पता लगता है कि बहुत कमी है, इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। यदि नियमानुसार दर से चन्दे देना शुरु करें तो मैं समझता हूँ कि मस्जिदों का निर्माण तथा अन्य जमाअत के कामों के लिए फिर बहुत कम अलग से तहरीक करनी पड़ेगी। अतः इस दृष्टि से अपनी समीक्षा करें तथा अपने चन्दा ए आम के बजट की दोबारा समीक्षा करके लिखवाएँ, जिन्होंने कम लिखवाए हुए हैं।

आज अन्तिम बात जिसकी ओर मैं ध्यान दिलाना चाहता हूँ वह आज्ञा पालन है। कुछ टेढ़े स्वभाव के लोग अथवा पाखंडी विचार रखने वाले यह कहते रहते हैं कि उचित निर्णय पर वचन लिया है और कहते हैं कि ख़लीफ़-ए-वक़्त के कुछ निर्णय मअरूफ़ अथवा उचित नहीं होते। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल ने इसको स्पष्ट करते हुए फ़रमाया कि यह शब्द नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए भी आया है। क़ुर्आन करीम में आता है कि- وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ और उचित बातों में तेरी अवज्ञा नहीं करेंगे, आप फ़रमाते हैं कि क्या अब ऐसे लोगों ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कमियों की भी कोई सूचि बना ली है कि कौनसी आप सही बात कहेंगे और कौनसी ग़लत कहेंगे, नऊज़ु बिल्लाह मिन ज़ालिक।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि आज्ञा पालन उचित निर्णय में अथवा उचित निर्णय जिसका आज्ञा पालन अनिवार्य है वे अल्लाह तआला के आदेश हैं और फिर उसके रसूल के आदेश हैं। अतः जब तक सच्ची ख़िलाफ़त स्थापित है, अल्लाह और उसके रसूल के विरुद्ध निर्णय नहीं होगा जो क़ुर्आन व सुन्नत है उसके अनुसार ही होगा। प्रत्येक वह व्यक्ति जो अपने आपको जमाअत का अंश समझता है उसका यह कर्त्तव्य है कि ख़लीफ़-ए-वक़्त की जो जमाअत के विषय में हिदायतें हैं उन पर अमल करे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यदि मुझसे जुड़ने वालों तथा मेरी बैअत में आने वालों का सुधार नहीं होता और वे अल्लाह और उसके रसूल की शिक्षानुसार अपने जीवन व्यतीत नहीं करते तो ऐसी बैअत का कोई लाभ नहीं। अतः हमारे अहमदी होने का लाभ तभी है जब हम इस सत्य को समझकर इसके अनुसार कर्म करने का प्रयास करें। अल्लाह तआला हम सबको इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को समझते हुए इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

TOLL FREE NO: 180030102131